हिन्दी प्रतिष्ठा (प्रथम पत्र)

पार्ट - प्रथम

Date :

हिन्दी साहित्य का इतिहास

डॉ० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य
हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय
रहिका, मधुबनी

पाठ्य विषय :- छायावाद युग
(1918 ई० - 1936 ई०)

छायावाद की परिभाषा :- 1918 के बाद हिन्दी कविता में जो आंदोलन आया उसे छायावाद कहते हैं। छायावाद के वास्तविक अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद है। छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डेय ने 'रहस्यवाद', सुशील कुमार ने 'अस्पष्टता', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अन्योक्ति पद्धति', रामचन्द्र शुक्ल ने 'शैली वैचित्र्य वैचित्र्य', नंद दुलारे बाजपेयी ने 'आध्यात्मिक छाया का भान' और डॉ० नगेन्द्र ने इसे 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह बताया है।

मुकुटधर पाण्डेय छायावाद को रहस्यवाद का अनुवाद मानते हैं, वे कहते हैं कि छायावाद एक ऐसी मायावाद सूक्ष्म वस्तु है, जिसका शब्दों द्वारा ठीक-ठीक वर्णन करना असंभव है। यहाँ शब्द अपना वास्तविक अर्थ खोकर सूक्ष्म सांकेतिक अस्पष्ट चिन्ह मात्र होता है। इसमें एक विचित्र उन्मादकता एवं अंतरंगता होती है। जिसके कारण प्रकृत वस्तु की जगह कोई अन्य वस्तु महत्वपूर्ण हो जाती है। इस अन्य वस्तु का संबंध कवि के अंतर्जगत से होता है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र रहस्य का मूल प्रकाशन है। उन्होंने छायावादी काव्य में मुख्य रूप से लाक्षणिकता, रहस्यात्मकता, आवेगमयता, अंतरंगता, कल्पनाशीलता आदि को छायवाद की विशेषताओं के रूप में रेखांकित किया है।

दूसरी तरफ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने छायावाद को रहस्यवाद का पर्याय मानने से इंकार किया है। उनके अनुसार सामान्य तौर पर किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो वह 'छायावादी कविता' है। उदाहरण के तौर पर पंत की निम्न पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं जो कहा तो जा रहा है छाँह के बारे में लेकिन अर्थ निकल रहा है नारी स्वातंत्र्य संबंधी :

Teacher's Signature :

Scanned with CamScanner

Date :

"कहो कौन तुम ~~दमर~~ दमयंती सी इस तरु के नीचे सोयी,
अहा तुम्हें भी त्याग गया क्या अलि नल-सा निष्ठुर कोई।

नन्द दुलारे वाजपेयी ने छायावाद को आध्यात्मिकता के परल पर रख के देखा है वे कहते है कि मानव अथवा प्रकृति के सौन्दर्य वर्णन में मेरी दृष्टि में आध्यात्मिकता ही सर्वोत्तम व्याख्या है। वाजपेयी ने कविता प्रकृति के सौन्दर्य पर लिखी जाती है इसको स्वीकार किया है। लेकिन उस पर सूक्ष्म ~~आध्याम~~ आध्यात्मिकता की छाया मौजुद रहती हैं।

डॉ० नगेन्द्र ने छायावाद की परिभाषा देते हुए कहते है कि "छायावाद "स्थूल के ~~खिलाफ~~ प्रति सूक्ष्म का विद्रोह" है, यह परिभाषा काफी लोकप्रिय है।

डॉ० नामवर सिंह ने छायावाद की परिभाषा देते हुए कहा कि छायावाद उस सांस्कृतिक जागरण की सशक्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर सामाजिक रूढ़ियों के विरूद्ध था और दूसरी ओर देश की पराधीनता को छायावाद युग गाँधी युग है। इसमें अपने समय की सांस्कृतिक चेतना की सशक्त कलात्मक अभिव्यक्ति हुई हैं। यह निश्चय ही तमाम बंदिशों के विरूद्ध है, मुक्ति का आंदोलन है। चाहे वे बंदिशे सामाजिक रूढ़ियों की हो या काव्य रूढ़ियों की चाहे वे मानसिक दासता की बंदिशें हो या राजनीतिक दासता की। इस कारण छायावाद सर्वोत्तम मुक्ति का काव्य है।

छायावाद 1918 से लेकर 1936 तक की प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की समस्त कविताओं का एक काव्यात्मक आंदोलन है। यह यूरोपिय रोमांटिसिज्म और भारतीय नवजागरण के क्रॉस कल्चर से पैदा हुआ है। ~~यह~~ यह भारतीय नवजागरण के टकराहट से पैदा हुई मिश्रित संस्कृति की देन हैं।

छायावाद युग की विशेषताएँ :—

01. ~~आत्म~~ आत्माभिव्यक्ति अर्थात् 'मैं' शैली/उत्तम पुरुष शैली।
02. आत्म विस्तार/ सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति।
03. प्रकृति प्रेम।
04. नारी प्रेम एवं उसकी मुक्ति का स्वर।
05. ~~अज्ञात~~ अज्ञात व असीम के प्रति जिज्ञासा (रहस्यवाद)।

Scanned with CamScanner

Date :

06. सांस्कृतिक चेतना व सामाजिक चेतना/मानवतावाद।
07. स्वच्छंद कल्पना का नवोन्मेष।
08. विविध काव्य-रूपों का प्रयोग।
09. काव्य-भाषा - ललित-लवंगी कोमल कांत पदावली वाली भाषा।
10. मुक्त छंद का प्रयोग।
11. प्रकृति संबंधी बिम्बों की बहुलता।
12. भारतीय अलंकारों के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य के मानवीकरण व विशेषण विपर्यय अलंकारों का विपुल प्रयोग।
13. पीड़ावाद।
14. कल्पना का प्राचुर्य
15. चित्रात्मकता और ध्वन्यात्मकता काव्य भाषा का विशिष्ट गुण।

छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति को मिलाया, निराला ने मुक्तक छन्द दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया, तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले। छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है। आधुनिक काल की छायावाद काल की अवधि (1918 ई० से 1936 तक) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने "नई काव्यधारा का तृतीय उत्थान" कहा है। इन्होंने हिन्दी कविता की नई धारा (छायावाद) का प्रवर्तक मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय को माना है, किन्तु इसे भ्रामक तथ्य मानकर खारिज कर दिया गया। इलाचन्द्र जोशी और विश्वनाथ मिश्र, जयशंकर प्रसाद को निर्विवाद रूप से छायावाद का प्रवर्तक मानते हैं। सन् 1913-14 के आसपास 'इन्दु' में प्रसाद की जिस ढंग की कविताएँ छपती थीं। (जो 'कानन कुसुम' में संकलित हुई) वे निश्चय रूप से तत्कालीन हिन्दी काव्य क्षेत्र में युग-परिवर्तन की सूचक हैं। विनयमोहन शर्मा और प्रभाकर माचवे ने माखनलाल चतुर्वेदी को तो नन्ददुलारे वाजपेई, सुमित्रानन्दन पंत को छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय देते हैं, किन्तु अब अब जयशंकर प्रसाद को ही सर्वमान्य रूप से छायावाद का प्रवर्तक माना जाने लगा है।

पूँजीवाद का विकास और व्यक्तिवाद का जन्म, स्वच्छन्दवादी

Teacher's Signature :

Scanned with CamScanner

Date :

प्रवृत्तियों का उदय, प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव, राजनीति के क्षेत्र में गांधीजी का आन्दोलन और स्वातंत्र्य प्रेम का जागरण, पाश्चात्य सभ्यता का नई पीढ़ी पर प्रभाव, अंग्रेजी के रोमाण्टिक कवियों का प्रभाव, कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रति श्रद्धाभाव, ब्रह्मसमाज का आंदोलन और ~~समाजस~~ राजा राममोहन राय के क्रांतिकारी विचार तथा कर्मकाण्डी वैष्णव धर्म के विरुद्ध ~~स्व~~ स्वामी दयानन्द का आर्य समाजी आन्दोलन, आदि विभिन्न सांस्कृतिक परिस्थितियों ने मिल-जुलकर छायावाद को जन्म दिया।

छायावाद के प्रमुख कवि

01. जयशंकर प्रसाद (1889-1937)

छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद का प्रथम कविता संग्रह 'कानन कुसुम' है जिसमें अनुभूति और अभिव्यक्ति का नया रूप मिलता है। 'झरना' में आधुनिक काव्य प्रवृत्तियाँ अधिक मुखर हुई हैं। 'आँसू' प्रसाद की विशिष्ट रचना है जिसमें कवि के हृदय की घनीभूत पीड़ा आँसुओं के माध्यम से व्यक्त हुई है। गीतकला ~~से~~ की दृष्टि से उत्कृष्ट 'लहर' प्रसाद की सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह है। प्रसाद की अंतिम प्रौढ़तम कृति 'कामायनी' है। इनके कवि जीवन का प्रारंभ 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा काव्य रचना से हुआ था।

02. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897-1961)

युगीन यथार्थ के प्रति निराला सर्वाधिक छायावादी कवि हैं। वे अपने समय के जितने विवादास्पद कवि रहे, उतने ही कालान्तर में निर्विवाद और सर्वमान्य भी रहे। अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण उन्हें सदैव विरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ा। छन्दों की रीतिबद्धता तोड़कर उन्होंने मुक्त छन्द में 'जूही की कली' कविता लिखी। उनकी प्रेम अभिव्यक्ति अन्य छायावादी कवियों से अलग थी। निराला प्रेम, विद्रोह, संघर्ष और क्रांति के कवि हैं। 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति' ~~अनक~~ उनकी आत्मचरितात्मक काव्य रचनाएँ हैं। 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका' आदि निराला के काव्य संग्रह हैं।

03. सुमित्रानन्दन पंत (1900-1977)

'प्रकृति के सुकुमार' कवि सुमित्रानंदन पंत ने नारी, प्रकृति, सौन्दर्य और जीवन के प्रति ~~मध्यम~~ मध्यमवर्गीय दृष्टिबोध का परिष्कार

Teacher's Signature :

Scanned with CamScanner

Date :

अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। 'उच्छवास', 'ग्रन्थि', 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन' उनकी छायावाद युग की रचनाएँ हैं।

4. महादेवी वर्मा (1907-1987)

महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनके काव्य में वेदना और दुःख की अभिव्यक्ति हुई है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्यगीत', और 'दीपशिखा' - महादेवी के प्रमुख काव्य संग्रह हैं। 'यामा' में उनकी छायावादी युग की प्रमुख कविताएँ संकलित हैं।

उपर्युक्त वर्णित कवियों को 'छायावाद का ~~मुख्य~~ स्तंभ' कहा जाता है। इनके अतिरिक्त राम कुमार वर्मा, उदय शंकर भट्ट, वियोगी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, माखन लाल चतुर्वेदी, सिया राम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' आदि ~~का~~ भी ~~छायावादी रच~~ छायावाद युग के प्रमुख रचनाकार हैं।

Scanned with CamScanner